

**संराधनीय** पुं. (तत्.) प्रसन्न और संतुष्ट करने योग्य अधिकारी।

**संराधित** वि. (तत्.) पूजा आदि के द्वारा प्रसन्न किया गया।

**संराध्य** वि. (तत्.) 1. वह अधिकारी जिसे संतुष्ट व प्रसन्न करना आवश्यक हो 2. तुष्ट करने योग्य 3. ध्यान द्वारा प्राप्त करने योग्य।

**संराव** पुं. (तत्.) गुलगपाड़ा, हल्ला गुल्ला, शोरगुल, कोलाहाल।

**संरुद्ध** वि. (तत्.) 1. रोका हुआ, बाधित, अवरुद्ध, भरा हुआ 2. मना किया हुआ, वर्जित 3. चारों ओर से घेरा हुआ, वेष्टित, ढका हुआ आवृत 4. अस्वीकृत।

**संरुद्ध** वि. (तत्.) 1. साथ-साथ उगा हुआ, अंकुरित, अच्छी तरह जमा हुआ, अच्छी तरह जड़ पकड़ा हुआ, किणान्वित 2. घाव भरा हुआ 3. मुकुलित, साहसी 4. भरोसे का 5. प्रौढ़, धृष्ट।

**संरोदन** पुं. (तत्.) दहाड़ मारकर रोना।

**संरोधन** पुं. (तत्.) 1. बाधा डालना, अवरोध करना, ठहराव या रुकावट पैदा करना, अड़चन डालना 2. दमन करना, नाश करना 3. बंदी बनाना, नाकाबंदी करना, घेराबंदी, बंधन, बेड़ी।

**संरोधनीय** वि. (तत्.) संरोधन के योग्य, रोक-छेक करने योग्य, जिसका संशोधन होने वाला हो दे. 'संरोधन'।

**संरोध्य** वि. (तत्.) रोकने-छेकने योग्य, कैद करने योग्य, संरोधनीय।

**संरोपण** पुं. (तत्.) 1. पौधा, पेड़ लगाना 2. घाव भरना।

**संरोपित** वि. (तत्.) जमाया हुआ, रोपा हुआ, लगाया हुआ।

**संरोप्य** वि. (तत्.) जमाने योग्य, लगाने लायक, रोपने के लिए उपयुक्त, जमाया हुआ, रोपा हुआ, लगाया हुआ।

**संरोह** पुं. (तत्.) 1. जमना, बढ़कर ऊपर छाना 2. घाव का भरना 3. फूटकर निकलना 4. व्यक्त होना।

**संरोहण** पुं. (तत्.) (पौधा) लगाना, रोपना, जमाना, बढ़कर ऊपर छा जाना, घाव का भरना वि. भरने वाला, सूखने वाला।

**संलक्षण** पुं. (तत्.) ताड़ लेना, निशान लगाना, पहचान लेना, विशेष चिह्नों द्वारा भेद स्पष्ट करना मनो. किसी रोग या मनोविकार के सूचक विभिन्न लक्षणों का समूह।

**संलक्षित** वि. (तत्.) पहचाना हुआ, लक्षणों से जाना हुआ।

**संलक्ष्य** वि. (तत्.) पहचाने जाने योग्य, लक्षित होने योग्य।

**संलक्ष्य क्रम व्यंग्य** पुं. (तत्.) साहित्य में वह व्यंजना जिसमें वाच्यार्थ से व्यंग्यार्थ की प्राप्ति का क्रम लक्षित हो।

**संलग्न** वि. (तत्.) सटा हुआ, चिपका हुआ, मिला हुआ, संयुक्त, गुँथा हुआ, भिड़ा हुआ, जुड़ा हुआ, संबद्ध, किसी के साथ बाद में जोड़ा हुआ या लगाया हुआ, नत्थी किया हुआ, गर्क लीन।

**संलपन** पुं. (तत्.) गपशप, संलाप, बातचीत।

**संलब्ध** वि. (तत्.) गृहीत, प्राप्त।

**संलय** पुं. (तत्.) 1. विलीन होना, घुल जाना, मिश्रण 2. लेटना 3. सोना 4. चिड़ियों का नीचे उतरना 5. प्रलय।

**संलयन** पुं. (तत्.) भौ. 1. चिपकाना, सटना, लीन होना, मिलकर एक होना, एकीकरण, घुल जाना। 2. लेटना, शयन, सोना, निद्रा, ठोस से द्रव अवस्था में परिवर्तन, दो हल्के नाभिकों के परस्पर लीन हो जाने से एक भारी नाभिक बनने की प्रक्रिया।

**संलाप** पुं. (तत्.) 1. परस्पर वार्तालाप, आपस की बातचीत, गोपनीय बातचीत, रहस्य वार्ता नाट्य. कथोपकथन, संवाद 2. अपने आप बड़बड़ाना, आवेगरहित कथोपकथन।

**संलापक** पुं. (तत्.) संस्कृत रूपकों में एक प्रकार का उपरूपक।